जैसा कि हमने पहले देखा है, परमेश्वर का वचन पढ़ना हमारे भीतर पवित्र आत्मा की भरपूरी को बढ़ाता है। लेकिन इससे भी बढ़कर, वचन हमारे आत्मा का मुख्य भोजन है। जिस प्रकार शरीर भोजन के बिना जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार आत्मा भी वचन के बिना जीवित नहीं रह सकती।

मत्ती 4:4 (ERV-HI)
यीशु ने उत्तर दिया, “शास्त्र में लिखा है, ‘मनुष्य केवल
रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर एक वचन से जीवित रहेगा।’”

बाइबल को पढ़ना ही आत्मिक रूप से बढ़ने का माध्यम है।

1 पतरस 2:2 (ERV-HI)
नवजात शिशुओं के समान तुम भी शुद्ध आत्मिक दूध की लालसा करो ताकि उसके द्वारा तुम्हारी उद्धार पाने के लिये बढ़ोत्तरी होती रहे।

वचन के द्वारा ही तुम्हारी सोच का नवीनीकरण होता है।

रोमियों 12:2 (ERV-HI)
इस संसार के ढाँचे में न ढलो, बल्कि अपने मन के नए हो जाने से कायाकल्पित हो जाओ ताकि तुम जान सको कि परमेश्वर की इच्छा क्या है—वह क्या अच्छी है, क्या स्वीकार्य है और क्या सिद्ध है।

बाइबल में तुम्हारे जीवन की भविष्यवाणी है। वहाँ शांति है, चेतावनी है, परामर्श है और मार्गदर्शन है।

भजन संहिता 119:105 (ERV-HI)
तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।

इसीलिए उद्धार के जीवन को वचन से अलग नहीं किया जा सकता। एक सच्चा विश्वासयोग्य व्यक्ति अपने जीवन की नींव परमेश्वर के वचन पर ही रखता है।

बाइबल पढ़ने के दो मुख्य तरीके

जब आप बाइबल पढ़ना शुरू करते हैं, तो यह जानना ज़रूरी है कि इसके दो प्रमुख तरीके हैं:

1. पूरी बाइबल को जानने के लिए पढ़ना

2. संदर्भ के अनुसार या विषयवार पढ़ना

ये दोनों तरीके ज़रूरी हैं और एक-दूसरे की पूरक भी हैं। पूरी बाइबल को जानना आवश्यक है ताकि संदर्भ को सही तरह समझा जा सके।

यदि आप प्रतिदिन 6–7 अध्याय पढ़ें, तो आप लगभग छह महीनों में पूरी बाइबल को पढ़ सकते हैं। और जब आप एक बार पढ़ लें, तो फिर से दोहराते रहें।

संदर्भ आधारित पढ़ाई अधिक गहन और मननशील होती है। इसमें किसी शिक्षक या मार्गदर्शक की मदद उपयोगी होती है। यह तरीका धीरे- धीरे और ध्यानपूर्वक अध्ययन करने की मांग करता है ताकि पवित्र

आत्मा आपको सच्चाई को समझाने में सहायता करे।

यूहन्ना 16:13 (ERV-HI)
जब वह अर्थात् सत्य की आत्मा आएगा तो वह तुम्हें समस्त सत्य की राह दिखाएगा।

बाइबल पढ़ते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. अपनी स्वयं की बाइबल रखें
एक नए मसीही के रूप में आपकी बाइबल में नया और पुराना नियम—कुल 66 पुस्तकें—होनी चाहिए।

2. प्रतिदिन एक शांत समय निर्धारित करें
एक शांत जगह चुनें जहाँ आप बिना किसी व्यवधान के ध्यान से पढ़ सकें।

3. एक डायरी और कलम रखें
जो कुछ आप सीखते हैं, उसे लिखें ताकि भविष्य में आप दोबारा

उसे देख सकें।

4. पढ़ने से पहले प्रार्थना करें
परमेश्वर से समझ और मार्गदर्शन माँगें।

5. जो कुछ पढ़ें, उसे जीवन में लागू करें
केवल सुनने वाले न बनें, बल्कि वचन को करने वाले बनें।

याकूब 1:22 (ERV-HI)
वचन के केवल सुनने वाले ही न बनो, बल्कि उसके अनुसार चलने
वाले बनो। नहीं तो तुम स्वयं को धोखा देते हो।

अन्य लोगों के साथ बाइबल पढ़ना भी एक अच्छा अभ्यास है। यदि आपको कोई मित्र मिले जो वचन से प्रेम करता है, तो उसके साथ नियमित रूप से मिलें और वचन पर मनन करें। ऐसे लोगों से दूरी बनाएँ जो परमेश्वर की भूख नहीं रखते। इस समय का अधिकतर भाग प्रभु की खोज में लगाएँ।

जैसे एक नवजात शिशु दिन में कई बार दूध पीता है ताकि उसका शरीर बढ़ सके, वैसे ही आप भी प्रतिदिन आत्मिक दूध—यानी परमेश्वर का वचन—लेते रहें।

अपने अध्ययन के लिए कुछ मुख्य वचन

भजन संहिता 119:11 (ERV-HI)
मैंने तेरा वचन अपने हृदय में रख लिया है, ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।

इब्रानियों 4:12 (ERV-HI)
क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रभावशाली है। वह हर एक दोधारी तलवार से भी अधिक तेज़ है। वह आत्मा और प्राण, जोड़ और मज्जा को भी चीरकर अलग करता है। वह हृदय के विचारों और मनसूबों की जाँच करता है।

यहोशू 1:8 (ERV-HI)
इस व्यवस्था की पुस्तक तेरे मुँह से न हटे। तू दिन-रात उस पर ध्यान लगाकर विचार करता रह ताकि तू उसमें लिखी हर बात के

अनुसार आचरण कर सके। तभी तू सफल होगा और तेरी उन्नति होगी।

प्रभु आपको वचन में बढ़ने के लिए आशीष दे।
अपनी आत्मा को परमेश्वर के वचन से प्रतिदिन पोषित करें—यही आपका आत्मिक जीवन, दिशा और बल है।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp